PEN2PRINT®
Edupedia Publications Pvt Ltd

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
March 2017

कबीर की सामजिकता

नीरजा सिंह

कबीर के समय की धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियां बहुत विचित्र थी व नित नवीन रूप धारण कर रही थी उस समय हिंदू, जैन, नाथ, मुसलमान जैसे विभिन्न धर्म मत पंथ प्रचलित थे और साथ ही साथ लोगों के बीच भी छोटे-छोटे संप्रदायों का विकास हो रहा था| जिसके कारण आडंबरों, रूढ़ियों, अंधविश्वास और पाखंड को आश्रय मिल रहा था व समाज में इनका बोलबाला होने लगा था| द्विवेदी जी कहते हैं कि "कबीर मुसलमान होकर भी असल में मुसलमान नहीं थे योगी होकर भी योगी नहीं थे वह कुछ भगवान की ओर से ही सबसे न्यारे बनाकर भेजे गए थे|"[1]

कबीर ने आडंबरों का खंडन किया वे कहते हैं-

"कबीर हिंदू मुये राम कहि मुस्लमान खुदाह|
कहे कबीर जो जीवता दुह में कदे न आह ||"[2]

कबीर के धर्म संबंधी विचार : कबीर स्वतंत्र थे और उनकी विचारधारा भी स्वतंत्र थी | वह किसी एक धर्म जाति व संप्रदाय में बंधे हुए नहीं थे, उनका मन भी इन बंधनों से मुक्त था | वह कुल की मर्यादा को भी नहीं मानते थे, इसे गले की फांसी समझते थे समाज में उस समय जितने भी धर्म थे उन्होंने प्रत्येक धर्म और संप्रदाय की दिखावटीपन का पर्दाफाश किया | आडंबरों का उन्होंने खुले शब्दों में, उपहास किया व उन्हें चुनौती दी | धर्म की शाखा उपशाखाओं के अनुयायियों में जो अंधविश्वास उन्हें दिखाई पड़ता था वह उस पर भी टूट पड़ते थे व कटु प्रहार करते थे| अपने उक्तियों के माध्यम से उन्होंने वाममार्ग की अनावश्यकता को स्पष्ट किया और लोगों को एक सार्वभौमिक धर्म समझाने का प्रयत्न किया| धर्म तत्व के मूल की ओर उन्होंने सब का ध्यान आकृष्ट करना चाहा व उसके अनुसार आचरण करने का भी सबको उपदेश दिया| कबीर धार्मिक आदर्शों का अनुसरण करने से पहले विवेक से काम लेने का भी अनुरोध करते थे और इसी दृष्टि से वह वेद को झूठा मानते थे| लेकिन कबीर विभिन्न धर्मों के कुछ मतों से प्रभावित भी थे| कर्मवाद व जन्म-जन्मांतर में उनकी आस्था को स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है| वह कहते हैं-

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
March 2017

"जल में माहे जलि भुई ,पूरब जनम लिषेणी|"

कबीर का मानना था कि भगवान जिसके साथ है और जिसकाअपने इष्ट पर अखंड वह विश्वास है उसकी साधना को करोड़ करोड़ काल व कष्ट भी झकझोर कर विचलित नहीं कर सकते हैं|उनका मानना था कि-

"जाके मन विश्वास है, सदा गुरु है संग |

कोटि काल झकझोर ही ,तऊ न हो चित्त भंग |"[3]

कबीर का समाज संबंधी दृष्टिकोण: कबीर का आविर्भाव उस समय हुआ जब सामंती समाज टूटने लगा था व पूंजीवादी समाज उभरने लगा था| “कबीर की वाणी की गूंज गरीब की झोपडी से लेकर विश्वविद्यालयों के परिसर में एक साथ सुनी जा सकती है|"[4] कबीर की प्रतिभा जिस कुंठा और त्रास की शिला पर घिस-घिस कर पैनी हुई वह उनके युग के यथार्थ से उभरी थी| कबीर का काव्य मात्र आक्रोश और विद्वेष का काव्य नहीं है| कबीर जहां कहीं भी सामाजिक विकृतियों से उदवेलित होते हैं सामंती

समाज के ठेकेदार सामंतों पंडितों मौलवियों को दुत्कारते फटकारते हैं ।

कबीर का समाज दर्शन अथवा आदर्श समाज विषयक उनकी मान्यताएं ठोस यथार्थ का आधार लेकर खड़ी है| अपने समय के सामंती समाज में जिस प्रकार का शोषण दमन और उत्पीड़न उन्होंने देखा-सुना था उनके मूल में उन्हें सामंती यथार्थ व धार्मिक पाखंड वाद दिखाई दिया जिसकी पुष्टि दार्शनिक सिद्धांतों की भ्रामक व्यवस्था से की जाती थी और जिसका व्यक्त रूप बाह्यचार एवं कर्मकांड थे| कबीर समानता के समर्थक थे और उन्होंने विषमता का कट्टर विरोध किया|जाति-पाति, धर्म, ऊंच-नीच, वर्ण के भेद को वे नहीं मानते थे और राजा और प्रजा दोनों को ही भगवान का अलग-अलग रूप मानकर के उनके मूल में परम शक्ति को स्वीकार करते थे| वे कहते थे- “हमारे और तुम्हारे भीतर एक ही रक्त का संचार हो रहा है एक से ही प्राण है और एक सा-ही जीव है,एक ही जीवन का मोह है चाहे नीचा हो, चाहे पवित्र हो, सभी को मां के गर्भ में दस माह रहना ही पड़ता है| इस प्रकार सकल

विश्व को एक ही जननी ने सृजित किया है,हम सब एक ही है फिर तुम किस ज्ञान से अलग-अलग हो रहे हो|”[5]

"ऊँकार आदि है मूला ,कौन ग्यान थे भये निवारा|”[6]

कबीर के युग में एक तरफ जहां सामंती ढांचा टूट रहा था जिस से जुड़ी सामंती संस्कृति में दरारें पड़ रही थी और साथ ही साथ साहित्य के माध्यम से लोक संस्कृति उभरने लगी थी |इसी लोक संस्कृति के द्वारा कबीर ने निराशावादी पद्धति को त्याग कर जीवन के स्वस्थ उपभोग का संदेश दिया| उनकी सदाचार विषयक मान्यता विवेक पर आधारित है जो व्यवहार सिद्ध व समाज के लिए उपयोगी है| रूढ़ियों पाखंडों अंधविश्वासों की उसमें गंध तक नहीं है| उनकी मान्यताएं आध्यात्मिक मानव को ही आदर्श मानकर चली है|वह कहते हैं-

“लोका मति के भोरा रे

जो कासी तन तजै कबीर तो रामहिं कहा निहोरा रे |”[7]

कबीर की आध्यात्मिकता उनकी सामाजिकता से

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
March 2017

प्रेरित है और उनकी सामाजिकता ही उनके अध्यात्म को एक अलग व विलक्षण दृष्टि दी है|उनकी आध्यात्मिक ने उन्हें सबसे बड़ी वस्तु ही सामाजिकता के रूप में दी है और यह वस्तु है उनकी निर्भयता| भय से मुक्ति और मनुष्य की स्वाधीनता व स्वतंत्रता के प्रति निष्ठा|कबीर को यह विशेषता अपनी कविता से प्राप्त हुई है जो उनके व्यक्तित्व में ऊर्जा के रूप में निहित है और इसी ऊर्जा से उन्हें अपने समाज की समझ और विषमता समाप्त करके उसे प्रेम के रूप में ढालने की इच्छा शक्ति प्राप्त हुई है |

कबीर के काव्य की मूल चेतना ही समाज संग्रह है, वैयक्तिक मुक्ति का विधान नहीं| कबीर की भक्ति समाज की ओर उन्मुख है|अपनी कविता के माध्यम से वह नर में ही नारायण की खोज करती है, मनुष्य में परम तत्व की खोज करती है कबीर मानव मात्र की समानता एकता व स्वतंत्रता का उद्घोष करते हैं| वे एक आदर्श आध्यात्मिक समाज में आदर्श मानव के निर्माण के प्रतिबद्ध है| मानव,धर्म,समाज ,साहित्य, भाषा सभी क्षेत्रों में उन्होंने समानता का समर्थन किया है | सभी भेदभाव से ऊपर उठकर जिस आदर्श व्यवस्था की और उन्होंने

उन्होंने संकेत किया है वह आज के युग में भी पूर्ण तरह प्रासंगिक है |धर्म का विरोध, रूढ़ियों का विरोध कर मानव धर्म का प्रतिपादन किया सहज भक्ति पर बल दिया,सहजता के मार्ग का प्रतिपादन दिया कर्मनिष्ठा पर बल दिया, दुराचार से दूर रहने की मानव मात्र को प्रेरणा दी वह उनके साहित्य की महान उपलब्धि है| उनका साहित्य, भाषा, शिल्प, भाव सभी एक सामान्य धर्म का प्रतिपादन करते हैं जिन में किसी भी तरह की रूढ़ियों का पालन नहीं किया गया है फिर चाहे वह साहित्य का रूप हो साहित्य में व्याप्त भावनाएं हो या भाषा हो सभी में उन्होंने लोक सामान्य भूमि से काम लिया है और यही उनके साहित्य की महानता है|

सन्दर्भ सूची :

१. कबीर, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी,पृष्ठ सं. १८१

२. कबीर ग्रंथावली,१२९,पद १२९

३. कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ सं ३४, साखी २२

४. कबीर साहित्य की परख ,परशुराम चतुर्वेदी,पृष्ठ सं. ५२

५. सत्य कबीर की साखी ,वेंकटेश्वर, बम्बई,१९९७

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
March 2017

६. कबीर ग्रंथावली,पृष्ठ सं. २४४

७. कबीर ग्रंथावली ,पृष्ठ सं.२४४

नीरजा सिंह (शोधार्थी)

८३, बाल विहार कॉलोनी,जोशी मार्ग के पास

कालवार रोड,झोटवाड़ा,जयपुर

राजस्थान,पिनकोड-३०२०१२,मोबाइल-९५३०१५७०३६